

गन्ना उत्पादन बढ़ाना जरूरी: सोलेमन

लखनऊ। देश की कुल गन्ना (5500 सौ लाख टन) और चीनी (350 लाख टन) उत्पादन की जरूरतों को पूरा करने के लिए प्रत्येक चीनी मील क्षेत्र में अगले 10-15 वर्षों में गन्ना उत्पादन बढ़ाना होगा। इस लक्ष्य को पूरा करने में भारतीय गन्ना



प्रशिक्षण

आइआइआरएस में गन्ना उपज बढ़ाने की तकनीक पर मंथन

निर्धारित लक्ष्य को पूरा करने में आइआइएसआर करेगा मदद

अनुसंधान संस्थान अपनी अंशम भूमिका निभाने के लिए तैयार है।

यह बात शुक्रवार को भारतीय गन्ना अनुसंधान संस्थान के निदेशक डॉ. सुशील सोलेमन ने चीनी मिलों के गन्ना विकास अधिकारियों को नवीन गन्ना उत्पादन तकनीकों में दक्ष और निपुण बनाने के लिए संस्थान गन्ना प्रबन्धन एवं विकास विषय पर चल रहे 21 दिवसीय राष्ट्रीय प्रशिक्षण



भारतीय गन्ना अनुसंधान संस्थान में चल रहे गन्ना विकास अधिकारियों के राष्ट्रीय प्रशिक्षण कार्यक्रम में देश भर से आये गन्ना विकास अधिकारियों ने परिसर में गन्ने की आधुनिक तरीके से हो रही खेती का मुआयना करते हुए

कार्यक्रम में बतौर मुख्यअतिथि अपने सम्बोधन में कही।

इस मौके पर प्रशिक्षण समन्वयक और वरिष्ठ वैज्ञानिक डॉ. ए के साह ने कहा कि गन्ना खेती में वैज्ञानिक विधियों का अधिक से अधिक प्रयोग

से वर्तमान के उत्पादन स्तर को 100 टन प्रति हेक्टेयर तक से जाया जाये और चीनी उत्पादन लगभग 11 किलो प्रति 100 किलो गन्ना हो। उन्होंने बताया कि देश में नयी चीनी मिलों को स्थापित करने या चीनी मिलों की

पेराई क्षमता बढ़ाने के लिए सरकार हर संभव प्रशासनिक सहायता दे रहा है। उन्होंने कहा कि ऐसा होने से प्रत्येक चीनी मिलों के लिए आवंटित गन्ना क्षेत्र सिमटता जायेगा। साथ ही गन्ना क्षेत्रफल भी 50-55 लाख हेक्टेयर से अधिक बढ़ने की संभावना भी नहीं है।

परिणामस्वरूप प्रत्येक चीनी मिल को वांछित अधिक गन्ना सिमित क्षेत्र में अधिक उपज कर प्राप्त करना होगा। जो की एक चुनौती है। ऐसे में इस तरह का प्रशिक्षण कार्यक्रम मील का पत्थर साबित होगा। प्रशिक्षण के माध्यम से मिलों में काम करने वाले गन्ना कार्यकर्ताओं को आधुनिक उत्पादन तकनीकों में अधिक जानकार तथा दक्ष बनाया जायेगा। जिससे वह किसानों को प्रशिक्षित कर तकनीकों का वृहत स्तर पर प्रयोग में ला पायेंगे। इस प्रशिक्षण कार्यक्रम में मवाना, डी एस सी एल, त्रिवेणी, बजाज, सेकसरिया, जवाहर सहकारी, डालमिया चीनी मिल समूहों के 20 गन्ना अधिकारी भाग ले रहे हैं। वसं

Training on sugarcane mgmt at IISR begins



Lucknow (PNS): A 21-day-long National Training on Sugarcane Management and Development from July 1-21, 2013, began at the Indian Institute of Sugarcane Research (IISR) here on Monday. It was inaugurated by Dr S Solomon, Director, IISR, Lucknow.

In his inaugural speech Dr Solomon remarked that this training was being organised to introduce science in sugarcane production at farmers' fields in the sugar mill zone area. He said that scientific information was badly needed at every level from field to factory and three major issues were a major concern of this training which were how to increase sugarcane yield, enhance sugar recovery in mills and how to decrease cost of cultivation to make sugarcane more profitable and popular among the farmers.

Scientist AK Sah informed newsmen that besides other issues like information on recent advances in sugarcane cultivation, problem in exchange of information, penetration of sugarcane technologies to the grassroot level, communication strategy to increase cane area and yield in mill zone, IT tools for cane management etc would be deliberated in detail during the training programme.

Dr TK Srivastava, head, Crop Production and Course Coordinator, highlighted the importance of knowledge delivery to address the challenges ahead before the sugar-

cane and sugar sector in the country. This training is supposed to be quite relevant due to liberalisation and introduction of the new sugar policy by the government. Scientists said that the new sugar mills and complexes were coming up and the existing sugar mills were planning to expand their crushing capacity which may require producing more sugarcane from the available cane acreage. "This needs effective use of sugarcane technologies. However, effective use of technologies largely depends on the knowledge and motivation of the personnel engaged in the cane development activities. They should be made aware about the new technologies so that they in turn could train and help the sugarcane growers for effective utilisation of innovative technologies. This is the major consideration under this training," said the scientists.

The training module thus developed will focus on the following thrust areas. Sugarcane and sugar scenario in India, techniques of cane seed production and multiplication of varieties planning, replacement, development and harvesting schedule, plant population management and planting methods, soil health management and Integrated Nutrient Management (INM), intercropping in sugarcane, water management in sugarcane, management of ratoon crop, mechanisation in sugarcane, sugarcane development strategies in sugar mill zone areas, management of sugarcane crop under abiotic stress conditions, physiological aspects for yield improvement, minimising post-harvest losses in sugarcane, biological control of insect and pests /diseases and IPM, integrated weed management, sugarcane marketing strategies and integrated communication strategy in sugarcane mill zone.

आईआईएसआर में चीनी मिल वालों को ट्रेनिंग

लखनऊ (ब्यूरो)। इंडियन इंस्टीट्यूट ऑफ शुगरकेन रिसर्च में प्रदेश और बिहार की 20 अलग-अलग गन्ना चीनी मिलों के अधिकारियों के लिए शुक्रवार को 21 दिनी प्रशिक्षण कार्यक्रम शुरू हुआ। इसमें संस्थान के निदेशक डॉ. सुशील सोलोमन ने बताया कि 100 किलो गन्ने से 11 किलो चीनी का उत्पादन हो इसके लिए वैज्ञानिक तकनीकों को अपनाने की जरूरत है। प्रशिक्षण समन्वयक वरिष्ठ वैज्ञानिक डॉ. एके साह ने बताया कि गन्ना उत्पादन क्षेत्रफल 55 लाख हेक्टेयर से अधिक नहीं बढ़ सकता।

गन्ना उत्पादन बढ़ाने पर जोर

भारतीय गन्ना अनुसंधान संस्थान के तत्वावधान में उपज बढ़ाने की तकनीक पर आधारित 21 दिवसीय राष्ट्रीय प्रशिक्षण कार्यक्रम

कैनविज टाइम्स ब्यूरो

लखनऊ। आगामी 10-15 वर्षों में देश की कुल गन्ना (55 सौ लाख टन) एवं चीनी (350 लाख टन) उत्पादन की जरूरतों को पूरा करने के लिए प्रत्येक चीनी मिल क्षेत्र में गन्ना का उपज बढ़ाना बहुत आवश्यक है। इस चुनौती को पूरा करने में भारतीय गन्ना अनुसंधान संस्थान, लखनऊ अपनी अहम भूमिका निभाने के लिए खास रणनीति बनाने में जुट चुका है।

इस क्रम में चीनी मिलों के गन्ना विकास अधिकारियों को आधुनिक गन्ना उत्पादन तकनीकों में दक्ष बनाने के लिए संस्थान गन्ना प्रबंधन एवं विकास विषय पर 21 दिनों का राष्ट्रीय प्रशिक्षण कार्यक्रम का आयोजन कर रहा है। प्रशिक्षण कार्यक्रम में मवाना, डीएससीएल, त्रिवेणी, बजाज, सेकसरिया, जवाहर सहकारी, डालमिया चीनी मिल समूहों के 20 गन्ना अधिकारी भाग ले रहे हैं। महाराष्ट्र, उत्तर प्रदेश एवं बिहार से आए हुए अधिकारी गन्ना उत्पादन के लिए नवीनतम तकनीक पर आधुनिक एवं प्रायोगात्मक जानकारी प्राप्त कर रहे हैं। प्रशिक्षण कार्यक्रम व संस्थान के निदेशक डॉ. सुशील सोलसेमन हैं जबांर प्रशिक्षण समन्वयक डॉ. एके साह व वरिष्ठ वैज्ञानिक हैं। गन्ना खेती में वैज्ञानिक विधियों के



अधिकाधिक प्रयोग से वर्तमान के उत्पादन स्तर को 100 टन/हेक्टेयर तक तथा चीनी उत्पादन लगभग 11 किलो प्रति 100 किलो गन्ना तक पहुंचे, इन्हीं बातों को ध्यान में रखकर प्रशिक्षण मॉडल तैयार किया गया है। डॉ. साह ने बताया कि देश में नई चीनी मिलों को स्थापित करने या चीनी मिलों की पुराई क्षमता बढ़ाने के लिए सरकार हर सम्भव प्रशासनिक सहायता दे रही है। ऐसा होने से प्रत्येक चीनी मिलों के लिए आवंटित गन्ना क्षेत्र सिमटता जाएगा। प्रशिक्षण के माध्यम से मिलों में काम करने वाले गन्ना कार्यकर्ताओं को नवीन

उत्पादन तकनीकों में अधिक जानकार तथा दक्ष बनाया जाएगा जिससे वो किसानों को प्रशिक्षित कर तकनीकों के बड़े पैमाने पर व्यावहारिक प्रयोग करा सकें। गन्ना उत्पादन के तमाम पहलुओं जैसे उन्नत प्रजाति बुवाई विधियों, पोषक प्रबंधन, सिंचाई प्रबंधन, पेडी प्रबंधन, बीमारियों एवं कीटों का समेकित उपचार, खेती की उन्नत मशीनों, कटाई के बाद गन्ना प्रबंधन, आधुनिक प्रसार विधियों, प्रबंधन में संचालन विधियों का उपयोग आदि विषयों पर गन्ना उत्पादकों के आवश्यक ज्ञानवर्धन किया जा रहा है।